सफेद लट नियंत्रण

खरीफ की अधिकांश फसलों में सफेद लट का प्रकोप होता है। इसकी प्रौढ़ अवस्था (बीटल) व लट दोनों नुकसान करती हैं।

प्रौढ़ कीट (भृंग नियंत्रण) :- मानसून या इससे पूर्व की भारी वर्षा एवं कुछ क्षेत्रों के खेतों में पानी लगने पर जमीन से भृंगों का निकलना शुरू हो जाता है। भृंग रात के समय जमीन से निकलकर परपोषी वृक्षों पर बैठते हैं। परपोषी वृक्ष अधिकतर खेजड़ी, बेर, नीम, अमरूद एवं आम आदि है। भृंगो का निकलना 4 से 5 दिन तक चालू रहता है। सफेद लट से प्रभावित क्षेत्रों में परपोषी वृक्षों पर, भृंग रात में विश्राम करते है। ऐसे वृक्षों को रात में छांट लेवें और दूसरे दिन मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. 25 मिली लीटर या क्यूनॉलफास 25 ई.सी. 36 मिली लीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोल कर इन्हीं वृक्षों पर छिड़काव करें। भृंग निकलने के तीन दिन बाद अंडे देना शुरू होता है इसलिये तुरन्त छिड़काव लाभदायक है।

- जहां वयस्क भृंगों को परपोषी वृक्षों से रात में पकड़ने की सुविधा हो वहां भृंगों के निकलने के बाद करीब 9 बजे रात्रि को बांसों की सहायता से परपोषी वृक्षों पर बैठे भृंगों को हिलाकर नीचे गिराये एवं एकत्रित कर मिट्टी के तेल मिले पानी में डालकर (एक भाग मिट्टी का तेल एवं 20 भाग पानी) नष्ट करें।

लटों वाली अवस्था में नियंत्रण - बाजरा :- एक किलो बीज में 3 किलो कारबोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण मिलाकर बुवाई करें। जहां बीज की मात्रा 4 किलो प्रति हैक्टेयर से कम काम में ली जा रही हो वहां भी दवा की मात्रा 12 किलो प्रति हैक्टेयर काम में लेवें।

बुवाई रोपाई से पूर्व दानेदार दवा द्वारा भूमि उपचार :- निम्नलिखित में से कोई एक दवा को बुवाई से पूर्व हल द्वारा कतारों में ऊर देवें तथा उन्हीं कतारों पर बुवाई करें। मिर्ची की पौध की रोपाई से पूर्व पौधे के नीचे दवा का प्रयोग करें।

क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण या कारबोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण या सेवीमोल 4 प्रतिशत कण 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से काम में लेवें। खड़ी फसल में सफेद लट नियंत्रण के लिये चार लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. प्रति हैक्टेयर की दर से सिंचाई के पानी के साथ देना चाहिये। यह उपचार मानसून की वर्षा के 21 दिन के आसपास/भृंगों की भारी संख्या के साथ ही खड़ी फसल में करें।■